TE TIRA ĀRAI URUTĀ
NZ ROYAL COMMISSION
COVID-19 LESSONS LEARNED

कोविड-19 से लिए गए अनुभवों के लिए गठित रॉयल कमीशन ऑफ इन्क्वायरी – नतीजे, सबक और सुझाव

यह दस्तावेज़ कोविड-19 से लिए गए अनुभवों के लिए गठित रॉयल कमीशन ऑफ इन्क्वायरी के काम का सारांश और जांच के दूसरे चरण की रिपोर्ट में निहित जानकारी प्रदान करता है।

कोविड-19 से लिए गए अनुभवों के लिए गठित रॉयल कमीशन ऑफ इन्क्वायरी क्या है?

कोविड-19 से लिए गए अनुभवों की जांच के लिए रॉयल कमीशन ऑफ इन्क्वायरी (जांच) की स्थापना 2022 में न्यूज़ीलैंड सरकार द्वारा एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड के कोविड-19 अनुभव की समीक्षा करने के लिए की गई थी ताकि देश भविष्य की महामारियों के लिए अधिक तैयार हो सके।

इन्क्वायरी (जांच) दो हिस्सों में हुई - पहला चरण और दूसरा चरण। पहले चरण में न्यूज़ीलैंड के महामारी के अनुभव के कई पहलुओं की समीक्षा की गई और 2024 में एक रिपोर्ट प्रकाशित की गई। दूसरे चरण में कुछ नए विषयों पर ध्यान दिया गया और साथ ही पहले चरण के कुछ विषयों पर अधिक विस्तार से विचार किया गया।

इन्क्वायरी (जांच) में न्यूज़ीलैंड के कोविड-19 के अनुभव और सरकार द्वारा महामारी के प्रबंधन के तरीके पर गौर किया गया। हमने हजारों दस्तावेजों पर विचार किया है और न्यूज़ीलैंड भर के पूर्व मंत्रियों और वरिष्ठ सरकारी कर्मचारियों, सामुदायिक और वकालत समूहों, व्यवसाय मालिकों और विशेषज्ञों सहित विभिन्न प्रकार के लोगों और संगठनों से सीधे बात की है।

जांच समिति ने अपनी पहली रिपोर्ट नवंबर 2024 में और दूसरी रिपोर्ट फरवरी 2026 में पूरी की। रिपोर्टें न्यूज़ीलैंड के महामारी अनुभव के बारे में हमने जो सीखा उसे साझा करती हैं और यह भी सिफारिश करती हैं कि सरकार भविष्य की किसी भी महामारी के लिए कैसे तैयारी और उसका प्रबंधन कर सकती है।

आप दोनों रिपोर्ट हमारी वेबसाइट पर पढ़ सकते हैं:www.covid19inquiry.nz

आप प्रथम चरण की रिपोर्ट का सारांश अंग्रेजी, ते रेओ माओरी, समोअन, टोंगन, हिंदी, सरलीकृत चीनी, न्यूज़ीलैंड सांकेतिक भाषा, आसान पठनीय भाषा, ब्रेल, ऑडियो और बड़े अक्षरों में इस वेबसाइट पर भी देख सकते हैं: https://www.covid19lessons.royalcommission.nz/translations-and-alternate-formats.

जाँच का दूसरा चरण

यह दस्तावेज़ इस बात का सारांश प्रदान करता है कि जांच के दूसरे चरण में एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड में कोविड-19 महामारी के बारे में क्या पता चला और हम सरकार को भविष्य की किसी भी महामारी की तैयारी और प्रबंधन के लिए क्या करने की सलाह देते हैं।

दूसरे चरण में, हमें देश की कोविड-19 प्रतिक्रिया से सबक सीखने का काम सौंपा गया था, ताकि हम महामारी से निपटने की अपनी पूरी तैयारी में सुधार कर सकें।

हमें फरवरी 2021 से अक्टूबर 2022 तक की अवधि में सरकार द्वारा लिए गए प्रमुख निर्णयों पर गौर करने के लिए कहा गया था, जिसमें उन निर्णयों के प्रभाव भी शामिल थे। हमें जिन खास विषयों को देखने के लिए कहा गया था, वे थे:

- टीकों की मंजूरी, प्रक्रियाएं और सुरक्षा
- टीकाकरण अनिवार्यता
- परीक्षण और ट्रेसिंग (पता लगाने की) तकनीक, और
- राष्ट्रीय और क्षेत्रीय लॉकडाउन

हमारी रिपोर्ट पिछले 15 महीनों में इकट्ठा किए गए सबूतों पर आधारित है।

हमने क्या पाया

कुल मिलाकर, हमने पाया कि उस समय उपलब्ध जानकारी के प्रकाश में, एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड की कोविड-19 महामारी के प्रति प्रतिक्रिया सुविचारित और उपयुक्त थी।

साथ ही, हमें ऐसे क्षेत्र भी मिले जहां हमें लगता है कि सरकार की प्रतिक्रिया को और मजबूत किया जा सकता था, जिनमें शामिल हैं:

- न्यूज़ीलैंड की पूरी रणनीति और व्यवस्थाओं का बदलती परिस्थितियों के प्रति हमेशा पर्याप्त रूप से तैयार न होना।
- कुछ निर्णय उपलब्ध जानकारी की तुलना में कम जानकारी के आधार पर लिए गए थे – उदाहरण के लिए, कुछ अधिदेश संबंधी निर्णय।

टीकों की मंजूरी, प्रक्रियाओं की सुरक्षा

उस समय निर्णय लेने वालों ने टीकाकरण को न्यूज़ीलैंड के लोगों को वायरस से बचाने और लॉकडाउन जैसे अन्य उपायों पर निर्भरता कम करने के एक तरीके के रूप में देखा।

हमने पाया कि:

- ठोस साक्ष्यों के आधार पर टीकों पर विचार किया गया और उन्हें मंजूरी दी गई, और टीकों की मंजूरी और सुरक्षा के बारे में निर्णय ठोस थे।
- विशेषज्ञों की सलाह और न्यूजीलैंड तथा विदेशों से प्राप्त निरंतर साक्ष्य और अनुभव के आधार पर संभावित जोखिमों या दुष्प्रभावों पर नज़र रखी गई।
- हालांकि सरकार ने जनता के साथ जोखिमों के बारे में जानकारी साझा की, लेकिन उन्होंने यह अनुमान नहीं लगाया कि टीकों की सुरक्षा को लेकर चिंताएँ कितनी बढ़ेंगी।

टीकाकरण अनिवार्यता

सरकार द्वारा टीकाकरण को अनिवार्य बनाने का निर्णय, महामारी प्रतिक्रिया के अधिक विवादास्पद पहलुओं में से एक के रूप में देखा गया था।

कुछ लोगों ने हमें बताया कि इससे उन्हें अधिक सुरक्षित महसूस हुआ, खासकर तब जब उन्हें वायरस से गंभीर रूप से प्रभावित होने का अधिक खतरा था। हमने ऐसे लोगों से भी सुना जिन्होंने कहा कि ये अनिवार्यता उनके अधिकारों का उल्लंघन करते हैं और नुकसानदायक हैं।

सभी सबूतों पर विचार करने के बाद, जांच समिति इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि टीकाकरण अनिवार्य करना एक वैध उपाय है, जो भविष्य में महामारी से निपटने के लिए एक विकल्प बना रहना चाहिए, लेकिन इसका उपयोग सावधानी से किया जाना चाहिए और साफ़ मानदंडों के आधार पर इसकी नियमित रूप से निगरानी और समीक्षा की जानी चाहिए।

अनिवार्यताओं को समाप्त करने के निर्णय शीघ्रता से लिए जाने चाहिए, क्योंकि इनका व्यक्तिगत अधिकारों पर असर पड़ता है।

परीक्षण और ट्रेसिंग (पता लगाने की) तकनीक

न्यूज़ीलैंड की स्वास्थ्य संबंधी प्रतिक्रिया में कोविड-19 पता लगाने के लिए जांच शुरू से ही एक महत्वपूर्ण घटक रही है।

यह प्रकोपों की पहचान करने और उनका प्रबंधन करने के लिए बहुत ज़रूरी था।

2021 के अधिकांश समय में, उनकी सटीकता के कारण पॉलीमरेज़ चेन रिएक्शन (पीसीआर) परीक्षणों पर निर्भरता रही, लेकिन डेल्टा महामारी के प्रकोप के कारण 2022 की शुरुआत में परीक्षण प्रणाली पर बहुत ज़्यादा दबाव पड़ा।

सरकार द्वारा वैकल्पिक परीक्षणों को मंज़ूरी देने में देरी और परीक्षणों के आयात पर सीमा लगाने की वजह का मतलब था कि कुछ लोगों को जरूरत पड़ने पर विश्वसनीय परीक्षण प्राप्त करने में कठिनाई हुई।

कुल मिलाकर, जांच में पाया गया कि परीक्षण प्रौद्योगिकियों पर लिए गए ज़रूरी फ़ैसले तकनीकी मामलों पर तो अच्छी तरह से आधारित थे, लेकिन दीर्घकालिक रणनीतिक विकल्पों पर नहीं।

लॉकडाउन

अगस्त 2021 में, डेल्टा वेरिएंट के फैलाव को कम करने के लिए राष्ट्रीय लॉकडाउन लागू किया गया था। सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों की सलाह के आधार पर ऑकलैंड, नॉर्थलैंड और वाइकाटो में लॉकडाउन की अवधि बढ़ा दी गई। लॉकडाउन क्षेत्र के अंदर और बाहर के समुदायों और व्यवसायों के लिए इसके महत्वपूर्ण परिणाम हुए।

जांच में पाया गया कि रणनीति की अधिक नियमित समीक्षा से लॉकडाउन से पहले बाहर निकलने में मदद मिल सकती थी, जब यह स्पष्ट हो गया था कि वायरस को खत्म करना संभव नहीं है।

हालाँकि, लॉकडाउन को बहुत पहले समाप्त करने या बिल्कुल भी लॉकडाउन न करने से भी हानिकारक आर्थिक और सामाजिक प्रभाव पड़ते।

संभावित सामाजिक और आर्थिक प्रभावों पर अधिक डेटा होने से निर्णय लेने की क्षमता मजबूत होती।

साक्ष्यों की समीक्षा करने के बाद, हम मानते हैं कि अधिकतर मामलों में, निर्णय लेने की प्रक्रिया पर्याप्त रूप से सूचित और उचित रूप से संतुलित थी।

जनता की प्रतिक्रियाएँ सुनना – महामारी संबंधी दृष्टिकोण रिपोर्ट

जांच समिति के कार्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा न्यूज़ीलैंड में महामारी का अनुभव करने वाले लोगों से बात करना था। हमें जनता से 31,000 से अधिक सार्वजनिक लिखित प्रस्तुतियाँ प्राप्त हुईं, और हमने देश भर के संगठनों और समुदायों से भी मुलाकात की ताकि उनकी राय जान सकें।

हमें यह सुनने को मिला:

टीके, मंजूरी, प्रक्रियाएं और सुरक्षा

- कुछ लोगों ने कहा कि वे कोविड-19 वैक्सीन की सुरक्षा को लेकर चिंतित थे और वैक्सीन से जुड़ी क्षति से पीड़ित होने के बाद खुद को असहाय महसूस कर रहे थे।
- लोगों ने कहा कि वे आम तौर इस बात से खुश थे कि टीकाकरण करवाना कितना आसान था।

टीकाकरण अनिवार्यता

- प्रस्तुतियों में टीकाकरण अनिवार्य करने का मुद्दा सबसे अधिक चर्चा का विषय था। टीकाकरण अनिवार्य करने के बारे में लोगों की मिली-जुली राय थी। कुछ लोगों का कहना था कि टीकाकरण अनिवार्यता ने लोगों को बांट दिया और इससे काफी आर्थिक दबाव पड़ा, और लोगों के लिए टीका न लगवाने का विकल्प चुनना आसान होना चाहिए था। कुछ अन्य लोगों ने कहा कि यह जानकर उन्हें सुरक्षित महसूस हुआ कि ज़्यादातर लोगों को टीका लगाया जा चुका है।

लॉकडाउन

- लोगों ने लॉकडाउन के दौरान अपने कठिन अनुभवों को साझा किया, जैसे कि अपनों से अलग होना या नौकरी छूट जाना। हालांकि, कई लोगों ने यह भी कहा कि उन्हें लगता है कि लॉकडाउन ने महामारी को रोकने में मदद की और उन्होंने लॉकडाउन के दौरान सरकार द्वारा लोगों को दिए गए समर्थन की सराहना की।
- लोगों ने अक्सर प्रतिबंधों की अवधि और आधार की आलोचना की, विशेष रूप से 2021 में ऑकलैंड, नॉर्थलैंड और वाइकाटो में लगाए गए लॉकडाउन की।

परीक्षण, ट्रेसिंग (पता लगाने की) तकनीकें और अन्य सार्वजनिक स्वास्थ्य सामग्री

- लोगों ने मास्क के कई नकारात्मक प्रभावों पर बात की, जिनमें मास्क न पहनने वाले लोगों के साथ बुरा व्यवहार, शारीरिक परेशानी, मास्क पहनने में कठिनाई और अन्य सामाजिक मुद्दे शामिल थे।
- लोग इस बात से खुश थे कि रैपिड एंटीजन टेस्ट (RATs) मुफ्त थे, हालांकि कई लोग चाहते थे कि उन्हें ये टेस्ट पहले मिले होते।

संचार और सूचना

- कुछ लोगों का मानना था कि सरकार का संवाद बहुत अच्छा था, जबकि अन्य लोगों का मानना था कि सरकार के संवाद ने लोगों को और अधिक भयभीत कर दिया।
- कुछ लोगों ने बताया कि उन्हें लगता है कि यह महामारी सरकार की साजिश थी और मनगढ़ंत थी।

माओरी, इवी और प्रशांत क्षेत्र के दृष्टिकोण

- माओरी और प्रशांत क्षेत्र के लोगों ने बताया कि महामारी के नियमों के कारण सांस्कृतिक परंपराओं का पालन न कर पाना कितना कठिन था।
- कई लोगों ने बताया कि महामारी के दौरान स्थानीय इवी और प्रशांत क्षेत्र समूह कितने सहायक थे।

क्षेत्रीय और भौगोलिक स्तर पर भागीदारी

- संगठनों से बात करते समय, हमें पता चला कि सरकार ने शुरुआत में संगठनों और समुदायों के साथ अच्छा काम किया, लेकिन यह सिलसिला हमेशा जारी नहीं रहा। वे यह भी देखना चाहते थे कि महामारी के दौरान शुरू हुए काम करने के कुछ नए तरीके महामारी के बाद भी चलते रहें।
- देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों ने कहा कि प्रत्येक क्षेत्र को अलग-अलग चुनौतियों का सामना करना पड़ा और उनकी जरूरतें भी अलग-अलग थीं।

समग्र प्रतिक्रिया

- सामान्य तौर पर, सरकार द्वारा महामारी के प्रबंधन को लेकर लोगों की मिली-जुली राय थी। बहुत से लोगों को लगा कि सरकार ने अच्छा काम किया है और सुरक्षित महसूस किया, जबकि अन्य लोगों को लगा कि सरकार का लोगों के जीवन पर बहुत अधिक नियंत्रण है। जिन लोगों को सरकार की प्रतिक्रिया पसंद नहीं आई, उन्होंने हमें बताया कि अब उन्हें सरकार पर भरोसा नहीं रहा।

हम क्या सुझाव देते हैं

इस जांच समिति ने सरकार को भविष्य की महामारियों से निपटने और उनका प्रबंधन करने के तरीके के बारे में सिफारिशें दी हैं।

जांच में ये सिफारिशें की गई हैं:

- बेहतर निर्णय लेने में मदद के लिए प्रणालियों को स्थापित करना, जिसमें सरकार भर में कार्यों की देखरेख के लिए एक रणनीतिक कार्य और महामारी के दौरान निर्णयों की नियमित समीक्षा शामिल है।
- समर्पित कानून की स्थापना करना जो महामारी के दौरान सरकार को उपलब्ध विशेष शक्तियों को निर्धारित करता हो। इसमें उन शक्तियों के दायरे को परिभाषित करना चाहिए और उन शक्तियों का प्रयोग किए जाने पर व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सुरक्षा के लिए उपाय प्रदान किए जाने चाहिए।
- राजकोषीय सुरक्षा कवच बनाकर, और व्यक्तियों, व्यवसायों और अर्थव्यवस्था के लिए समर्थन की योजना बनाकर महामारी के आर्थिक प्रभावों की तैयारी करना।
- महामारी का सामना कर रहे निर्णयकर्ताओं के लिए एक व्यावहारिक मार्गदर्शिका बनाना और उसे बनाए रखना।
- कोविड-19 के प्रति प्रतिक्रिया के सामाजिक प्रभावों के बारे में समझ और महामारी के दौरान प्रभावी ढंग से संवाद कैसे करना है, में सुधार करना।

जांच के सभी निष्कर्ष और सिफारिशों की पूरी सूची जांच समिति की वेबसाइट - www.covid19inquiry.nz पर देखी जा सकती है

अब क्या होगा

जांच अब पूरी हो चुकी है, और पहले और दूसरे चरण की रिपोर्ट सरकार को दे दी गई है।

अब यह सरकार पर निर्भर है कि वह भविष्य की महामारियों के लिए एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड को तैयार करने में मदद करने के लिए किन सुझावों पर काम करेगी।

जांच में एकत्रित सभी जानकारी न्यूजीलैंड अभिलेखागार में संग्रहीत की जाएगी। इसमें से कुछ जानकारी जनता द्वारा देखी जा सकती है, जबकि अन्य जानकारी को गोपनीय रखा जाएगा।

यदि आपके मन में जांच समिति के कार्य से संबंधित कोई प्रश्न है, तो आप इस पते पर ईमेल कर सकते हैं inquiryintocovid-19lessons@dia.govt.nz

जांच समिति के कार्य के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने या हमारी रिपोर्ट पढ़ने के लिए, कृपया यहां पर जाएं: www.covid19inquiry.nz